विचार बिन्दु

जीवन का रहस्य भोग में स्थित नहीं है, यह केवल अनुभव द्वारा निरंतर सीखने से ही प्राप्त होता है। –विवेकानंद

क्या करें, समय ही नहीं मिलता है!

क्या करें, समय ही नहीं मिलता है – यह एक ऐसा वाक्य है जिसे आप दिन में कई बार कई-कई लोगों से सुनते हैं। पहली ही बार में यह स्पष्ट कर दूं कि यह वाक्य जस-का-तस नहीं होता। कहा जाता है– 'क्या करें, टाइम ही नहीं मिलता है'। मैंने अपनी आदत के चलते टाइम को समय कर दिया है। बात एक ही है। अभी दो दिन पहले एक संस्थान में भाषा की महत्ता पर भाषण देने के लिए जाने का मौका मिला। मैंने अन्य बातों के अलावा इस बात पर भी ज़ोर दिया कि अपनी भाषा सुधारने का एक तरीका यह भी है कि खूब पढ़ा जाए! बाद में चर्चा के दौरान जब मैंने उपस्थित सम्भागियों से यह जानना चाहा कि क्या वे अपनी फुर्सत के समय में कुछ पढ़ते हैं, तो उन सबका एक ही जवाब था। वह जवाब, जो इस लेख का शीर्षक है। यह तो गनीमत है। ये लोग नौकरी पेशा, घर-बारी लोग थे। इनके पास एक पक्की सरकारी नौकरी थी। हद्द तो तब हुई जब एक नौकरी, वह भी शिक्षक की नौकरी, बड़ी नौकरी, के लिए साक्षात्कार लेते हुए मैंने नौकरी चाहने वालों से यह पूछा कि उन्होंने हाल में क्या नया पढ़ा है, तो उनमें से करीब-करीब सभी का यही जवाब था, कि क्या करें, टाइम ही नहीं मिलता है! और मैं सोचने लगा था कि अगर अभी जब इन्हें नौकरी की ज़रूरत है, तब इन्हें पढ़ने का टाइम नहीं मिल रहा है, तो जब नौकरी मिल जाएगी, तब क्या इन्हें, इन्हीं के शब्दों में, पढ़ने का टाइम मिलेगा? तब तो नौकरी ही इनका बहुत सारा समय खा जाएगी, फिर घर-परिवार की बहुत सारी ज़िम्मेदारियां भी होंगी। तो क्या यह मान लें कि जो लोग पढ़ाने के काम में लगेंगे, वे पढ़ने के लिए कोई समय तब भी नहीं निकाल सकेंगे, अभी तो नहीं ही निकाल सक रहे हैं! और जो नहीं पढ़ रहे हैं, वे क्या और कैसा पढ़ाएंगे, यह सहज ही सोचा जाना जा सकता है!

बात केवल पढ़ने की ही नहीं है। अगर आप अपने किसी जान पहचान वाले से उसके स्वास्थ्य के बारे में बात करें और अगर उपयुक्त लगे तो किसी तरह के व्यायाम, योग वगैरह में संलग्न होने की सलाह दें तो तब भी जवाब यही होगा – "मन तो बहुत करता है,लेकिन क्या करें, समय ही नहीं मिलता है!" अगर आप किसी से उसकी हॉबी के बारे में बात करें तो भी बहुत सम्भावना यही है कि वह आपसे कहे, मन तो बहुत करता है, लेकिन क्या करें, समय ही नहीं मिलता है! मतलब यह कि हमारा मन तो बहुत सारी बातों के लिए करता है, लेकिन हम अपने मन की कर नहीं पाते हैं। और न कर पाने का एकमात्र कारण होता है – समय नहीं मिलता है!।

कई बार संकट समय का न होकर संसाधन का भी होता है। जो लोग पढ़ना चाहते हैं उनका यह भी कहना होता है कि किताबें बहुत महंगी हैं, पत्रिकाएं मिलती नहीं है, वगैरह। जब मैं उनकी कही बात पर विचार करता हूं तो अनायास ही मेरा ध्यान भटक कर इधर उधर भी चला जाता है। जो लोग किताबों के महंगी होने की बात करते हैं, मैं पाता हूं कि उनमें से कई ने बहुत महंगे, ब्राण्डेड कपड़े, खूब महंगे जूते पहन रखे हैं। थोड़ी देर पहले वे यह भी बता रहे थे कि दो दिन पहले अमुक रेस्तरां में, जो मेरी जानकारी के अनुसार बहुत महंगा है, भोजन करके आए हैं, आदि। और जब ध्यान इन बातों की तरफ जाता है तो मैं सोचता हूं कि ऐसा क्यों है कि इन्हें केवल किताबें ही महंगी लगती हैं, किसी मल्टीप्लेक्स में फ़िल्म देखना या हवाई जहाज में यात्रा करना महंगा नहीं लगता है! इसी तरह जब कोई यह कहता है कि पत्रिकाएं नहीं मिलती हैं तो मेरा ध्यान इस बात पर जाए बिना नहीं रहता है कि वे अपनी ज़रूरत की बहुत सारी चीज़ें ऑनलाइन भी मंगवाते हैं। क्या वे अपनी पसंद की कोई पत्रिका डाक से नहीं मंगवा सकते? और जिनके लिए किसी भी वजह से यह भी मुमकिन न हो वे क्यों न ऑनलाइन कोई किताब या पत्रिका पढ़ सकते हैं? वे सोशल मीडिया पर बहुत सारा समय बिताते हैं, हर सुबह पचास लोगों को ग़ुडमॉर्निंग का संदेश और दो सौ लोगों को भगवान की तस्वीरें भेजते हैं, दिन भर वॉट्सएप पर आए संदेशों को इधर से उधर भेजते हैं अर्थात फॉरवर्ड करते हैं। निश्चय ही उन्हें खुद भी पढ़ते ही होंगे। क्या इस सब में समय नहीं लगता है? तो फिर ये ऑनलाइन कुछ अच्छा क्यों नहीं पढ़ सकते?

> **यह बहुत स्पष्ट है कि जो लोग पढ़ने के सवाल पर समय न होने की बात करते हैं, असल में पढ़ना उनका मनपसंद काम नहीं है। लेकिन ऐसा कहते उनको संकोच होता है इसलिए वे समय न होने का रेडीमेड बहाना हमारे सामने रख देते हैं। यही बात चीज़ों के महंगा और सस्ता होने के बारे में भी है।**

बात बहुत स्पष्ट है। समय न होना महज़ एक बहाना है। एकदम झूठा बहाना! असल में यह हमारी प्राथमिकता में है ही नहीं। हम पढ़ना चाहते ही नहीं हैं। और बहुत मज़े की बात यह कि हम जो खुद कभी किताब को हाथ नहीं लगाते, नई पीढ़ी को गरियाते रहते हैं कि उसका किताबों से रिश्ता ख़त्म हो गया है और वह स्क्रीन पर ही सारा समय गुज़ार देती है। ऐसा कहने वाले मां-बाप ज़रा आत्म निरीक्षण करें और यह देखें कि खुद वे कितनी किताबें पढ़ते हैं, खुद वे कितनी किताबें या पत्रिकाएं खरीदते हैं, खुद वे चौबीस घण्टों में से कितना समय अपने बच्चों से किताबों या लेखन या विचारों की चर्चा में व्यतीत करते हैं? इस सारे सवालों का जवाब उनकी तरफ से मैं ही दे देता हूं – समय ही नहीं मिलता है!

जहां तक समय के मिलने न मिलने की बात है, मैं जहां चाह वहां राह वाली बात को याद कर लेना चाहता हूं। अगर आप चाहें तो चौबीस घण्टों में से कुछ समय अपने मनपसंद काम के लिए निकाल ही सकते हैं, बल्कि कहूं कि निकाल ही लेते हैं। इसलिए यह बहुत स्पष्ट है कि जो लोग पढ़ने के सवाल पर समय न होने की बात करते हैं, असल में पढ़ना उनका मनपसंद काम नहीं है। लेकिन ऐसा कहते उनको संकोच होता है इसलिए वे समय न होने का रेडीमेड बहाना हमारे सामने रख देते हैं। यही बात चीज़ों के महंगा और सस्ता होने के बारे में भी है। अगर आपकी तमन्ना होती है तो आप जैसे-तैसे करके, अन्य खर्चों में कटौती करके भी महंगी चीज़ खरीद ही लेते हैं, लेकिन अगर आपकी रुचि नहीं होती है लेकिन यह कहते आपको लाज लगती है तो आप चीज़ विशेष के महंगा होने का सम्मानजनक बहाना कर देते हैं।

मैं जब अपने शिक्षक मित्रों से यह सुनता हूं कि उन्हें कुछ पढ़ने का समय नहीं मिलता है या उन्हें पाठ्य सामग्री नहीं मिलती है, तो मुझे बहुत बुरा लगता है। अगर शिक्षक के पास भी पढ़ने का समय नहीं है तो औरों से उम्मीद ही क्या की जाए? वैसे भी शिक्षा का काम अन्य कामों से इस मामले में बेहतर और भिन्न है कि यहां काम का दबाव अपेक्षाकृत कम होता है और इस कम दबाव से बचे समय और शक्ति का उपयोग बहुत सहजता से पढ़ने में किया जा सकता है। शैक्षिक संस्थाओं में जैसी-तैसी ही सही लाइब्रेरी भी होती है और किताबें-पत्रिकाएं खरीदने का कुछ न कुछ बजट भी होता है। और थोड़ी देर के लिए मान लें कि ऐसा कुछ भी नहीं होता है, तो भी शिक्षकों को वेतन तो मिलता ही है। क्या उस वेतन में से वे एक अंश अपनी बौद्धिक भूख को मिटाने के लिए खर्च नहीं कर सकते हैं? क्या उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए? जो लोग अपेक्षाकृत बड़े कस्बों-शहरों में रहते हैं उन्हें तो ठीक-ठाक पुस्तकालयों की सुविधा भी सुलभ होती है। लेकिन कटु यथार्थ यह है कि मैं जिन कॉलेजों में रहा वहां मैंने पाया कि अधिकतर शिक्षक तो पुस्तकालय में अपना खाता ही नहीं खोलते हैं। अगर आप किसी शिक्षक से पूछें कि उसने साल में कितनी नई किताबें पढ़ीं, या उसने एक साल में किताबों और पत्रिकाओं पर कितना खर्च किया, तो जो जवाब सामान्यत: मिलेगा, उसका अनुमान आप पहले से लगा सकते हैं। जवाब होगा – निल बटे सन्नाटा!

मेरा यह लेख केवल शिक्षकों को सम्बोधित नहीं है, हालांकि उन्हें ज़्यादा सम्बोधित है। मैं यह बात सभी से कहना चाह रहा हूं। चाहे वे व्यापारी हों, सेवा निवृत्त हों, सेवारत हों, गृहस्थ हों, स्त्री हों, पुरुष हों, विद्यार्थी हों, नौकरी चाहने वाले हों, स्टार्टअप के आकांक्षी हों – जो भी हों, आपको नियमित रूप से कुछ न कुछ पढ़ना चाहिए। पढ़ना असल में आपके ज्ञान क्षितिजों का विस्तार है। और जब मैं पढ़ने की बात कह रहा हूं तो निश्चय ही वॉट्सएप विश्वविद्यालय के कूड़े को पढ़ने की बात नहीं कर रहा। और न ही राजनीतिक दलों के आई टी सेलों द्वारा साभिप्राय फैलायी जाने वाली गंदगी को पढ़ने की बात कर रहा हूं। अगर आप यह सब न पढ़ें तो समाज पर बहुत बड़ा उपकार करेंगे। लेकिन कोशिश कीजिए, कि हर रोज़ कुछ न कुछ अच्छा पढ़ें, और उस पर औरों से बात करें! यह बहुत ज़रूरी है।

ऐसा करने से बचने के लिए समय न होने का बहाना न करें!

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

विपक्षी पार्टियों को यह भी समझ लेना चाहिए कि केवल बैठक मात्र से जनता मोदी सरकार के खिलाफ कैसे होगी

राजेन्द्र जोशी

देश के आम चुनाव 2024 में होने वाले हैं। लोकसभा चुनाव से पहले विपक्षी पार्टियां चाहती है कि मोदी सरकार को उखाड़ फेंके। इसके लिए विपक्षी पार्टियां पटना में बैठक से शुरुआत कर चुकी है। विपक्षी पार्टियां एक बैठक और करेगी फिर सीटों का बँटवारा होगा। यक्ष सवाल हमारे सामने आता है कि क्या विपक्षी पार्टियों के एक होने से उन्हें मोदी के खिलाफ जनादेश मिल जाएगा? शायद राजनीतिक पार्टियां भूल रही है। 1977 से पूर्व देश में इंदिरा सरकार के खिलाफ एक बड़ा आंदोलन प्रारंभ किया गया। इंदिरा सरकार के खिलाफ जन जागरण हुआ, जेपी आंदोलन में देश का युवा राजनीति से जुड़ा, जो युवा देश की राजनीति में उस समय आया वह सभी इंदिरा जी के खिलाफ मन बनाकर ही आया, तब तक ना तो विपक्षी पार्टियां एक हुई थी और ना ही चुनावी रणनीति बनी थी। राजनीतिक पार्टियां यह भूल रही है कि केवल हमारे एक होने से मोदी सरकार के खिलाफ जनादेश उनके पक्ष में आने वाला नहीं है। जिस समय देश में राजनीतिक पार्टियां एक हुई थी उस समय जनता पार्टी का गठन हुआ था, कांग्रेस के खिलाफ जनता पार्टी ने चुनाव लड़ा था उस आम चुनाव में जनता पार्टी के बैनर तले देश में राजनीतिक अनुशासन भी बना, राजनीतिक दल एक हुआ था। और वही दल चुनाव लड़ा था। ऐसी स्थिति में आज विपक्ष हमारे देश में नहीं है। यहां यह भी सोचना होगा कि इस समय ना तो मोदी सरकार के खिलाफ देश में जन आंदोलन है और ना ही कोई जेपी है और तो और ना ही मोदी सरकार के खिलाफ एक होकर के चुनाव लड़ने की कोई कार्य योजना। वैसे हालात पैदा किया जाना विपक्षी पार्टियों के बस की बात नहीं है। जिसका नतीजा पहली ही बैठक में केजरीवाल के बेमेल सूर हमारे सामने आए तो केसीआर आए नहीं।

विपक्षी पार्टियों को यह भी समझ लेना चाहिए कि केवल बैठक मात्र से जनता मोदी सरकार के खिलाफ कैसे होगी। कांग्रेस के अलावा लगभग सभी पार्टियां क्षेत्रीय दल के रूप में अपना प्रभाव रखती है, कांग्रेस पूरे देश में पहचान रखती है। क्या क्षेत्रीय दल कांग्रेस को लोकसभा चुनाव में अपनी सीटें दे देंगे, अगर अधिक सीटें नहीं देंगे

> ■ **सत्ता परिवर्तन के लिए जन आंदोलन और जेपी चाहिए**

तो फिर कांग्रेस लोकसभा में कैसे जीतेगी? कितना ही सीटों का बंटवारा हो जाए नुकसान कांग्रेस को होना है। विपक्षी पार्टियां एक होकर लोकसभा चुनाव में उतरने का ख्वाब देख रही है जो संभव नहीं है। विपक्ष की एकता का राग वही नेता अलाप रहे हैं जो प्रधानमंत्री बनने का सपना देख रहे है।

कांग्रेस को यह भी स्मरण करना होगा कि पी. वी. नरसिंहराव ने जो पहल उत्तर प्रदेश में जिस समय पहला गठबंधन किया था और खुद 85 सीटों पर सिमट कर विधानसभा चुनाव लड़ा था, उसके बाद उत्तर प्रदेश में सरकार तो बनना दूर, पार्टी के कार्यकर्ता तक छिटकते चले गए और हालात अभी तक यह है कि कांग्रेस संगठन में पदाधिकारी बनने वाले मजबूत आदमी तक नहीं है। कांग्रेस जैसी पार्टी के उम्मीदवार जब चुनाव में खड़े नहीं होते हैं तो कार्यकर्ता कांग्रेस को छोड़ते जाते हैं। और यही स्थिति आज हम उत्तर प्रदेश में देख सकते हैं कि कांग्रेस के पास कार्यकर्ता तक नहीं है। ऐसे में कांग्रेस अगर विपक्षी पार्टियों के साथ मिलकर चुनाव लड़ती है तो उसका भविष्य क्या होगा। यह कांग्रेस को अभी एहसास नहीं है। यह बात भी सही है कि 1977 के बाद बनी जनता पार्टी की सरकार तीन साल से अधिक नहीं टिक पाई। विपक्ष की सरकार बन भी जाती है तो उसकी उम्र कितनी होगी यह भविष्य के गर्भ में नहीं है बल्कि सामने दिखाई दे रहा है। विपक्षी पार्टियां हिमाचल प्रदेश और कर्नाटका के बाद यह मान रहे हैं कि वहां कांग्रेस की स्थिति मजबूत हुई है, लेकिन लड़ाई अब लोकसभा चुनाव की है। विपक्ष को पिछले लोकसभा चुनाव से सबक लेना चाहिए जब राजस्थान में कांग्रेस की सरकार बनी और लोकसभा चुनाव में कांग्रेस को एक भी सीट नहीं मिली।

बीजेपी और क्षेत्रीय पार्टियां इस समय देश में हावी है। क्षेत्रीय पार्टियां जहां नहीं है वहां भारतीय जनता पार्टी मुखर है जिस तरह राजस्थान और उत्तर प्रदेश में हम देख सकते राजस्थान की तो हालात यह है कि कांग्रेस की सरकार बनने के बाद हुए लोकसभा चुनाव में एक भी सीट कांग्रेस को नहीं मिली।

उस समय सीधी टक्कर कांग्रेस और बीजेपी में थी ऐसे में विपक्षी पार्टियां एक होकर के क्या करेगी।

एक बात स्पष्ट दिखाई दे रही है कि इस विपक्षी एकता में क्षेत्रीय दलों को ही लाभ होने वाला है, उनकी सीटें बढ़ेगी। कांग्रेस को कोई भी दल अपने-अपने क्षेत्र में बहुत अधिक सीटें देने की स्थिति में नहीं रहेगी। और कांग्रेस को क्षेत्रीय पार्टियाँ जितनी सीट दे देती है तो क्या कांग्रेस वह सभी सीटें जीत पायेंगी। हम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश की बात करें तो वहां कांग्रेस की हालात लोकसभा चुनाव के लिए कोई अच्छी नहीं है। सवाल खड़ा होता है कि विपक्ष मोदी सरकार को उखाड़ना चाहता है तो उसे अभी एकता का परिचय देना होगा, पूरे देश में आंदोलन करना होगा, वह सामूहिक आंदोलन हो, और मोदी सरकार के खिलाफ जन जागरण के माध्यम से मतदाताओं को आक्रोशित करने में कितनी सफलता विपक्ष को मिल सकती है।

आज हालात यह है कि विपक्ष मोदी सरकार के खिलाफ किसी भी एक स्थान पर एकजुट होकर विरोध का बिगुल नहीं बजा रहा। बैठकों से मतदाता इनके पक्ष में रुझान बना सके यह कहना बहुत मुश्किल है।

उस समय मोरारजी देसाई, चंद्रशेखर, जयप्रकाश नारायण, अटल बिहारी वाजपेई सहित समूचे विपक्ष ने एक होकर ऐसे हालात बना दिए इंदिरा जी को देश में आपातकाल घोषित करना पड़ा। जेले नेताओं से भर गई तब कहीं इंदिरा जी को विपक्ष सत्ता से हटाने में कामयाब हो पाया। उस समय के हालात क्या आज का विपक्ष बना सकता है।

मोदी सरकार को आपातकाल लगाने को मजबूर कर सकता है? मोदी सरकार के खिलाफ बिगुल बैठकों से नहीं बजेगा। ऐसी स्थितियाँ वर्तमान विपक्षी पार्टियों के बूते में दिखाई नहीं दे रही है। इसलिए अगर बैठकर कामयाब भी हो जाती है और सीटों का बंटवारा भी हो जाता है तो भी सत्ता परिवर्तन होना मुश्किल लगता है।

– राजेन्द्र जोशी,
कवि-कथाकार, बीकानेर

निकासी के अभाव में रास्ता बना तलैया

राजसमंद, (निसं)। जिले के झोर गांव से नेगडिया का खेडा की ओर जाने वाले खेतो के रास्ते में निकासी के अभाव में 700 मीटर दूरी तक घुटनो तक बारिश का पानी भरा हुआ है, जिसके कारण वहां पर किचड बना हुआ है। जिससे 20 काश्तकारों को अपने खेतों से घर तक अपने गांव में आने जाने में समस्या हो रही है।

निकासी के अभाव में बारिश का पानी रास्ते में भरा हुआ है जिससे इस रास्ते ने एक तलैया का रूप ले रखा है। लम्बे समय से इस रास्ते से पानी की निकासी अवरुद्ध हो रही है। ग्रामीणों ने बताया कि 2 वर्ष पूर्व में पीडब्ल्यूडी विभाग द्वारा ठेकेदार के मार्फत रास्ते के आगे की ओर सडक का डामरीकरण करने को लेकर ऊंचा कर दिया तब से यह समस्या हो रही है। पूर्व में ग्राम पंचायत को भी शिकायत की गई है लेकिन इस ओर ध्यान नहीं दिया गया है। गौरीशंकर शर्मा, देवीलाल शर्मा, कमला देवी, गीता देवी ने बताया कि पानी के अंदर जहरीले जीव जंतु बहुत घूमते हैं ऐसे में काश्तकारों के लिए खतरा बना हुआ है। किसानों को जहरीले जीव जंतुओं का डर बना हुआ है। महिला काश्तकार ने बताया कि हम हर रोज यहां से गुजरते है, इस दौरान अगर कोई जहरीले जीव जंतु काट लेंगे तो कौन जिम्मेदार रहेंगे। किसानों ने पंचायत प्रशाशन से जल्द ही पानी की निकासी की मांग की है।

राजसमंद। निकासी के अभाव में बारिश के पानी से भरे रास्ते से निकलते है लोग।

> ■ **खेतों पर जाने वाले किसान पानी व कीचड से होकर निकलने को मजबूर**

देवीलाल पोसवाल, ग्राम विकास अधिकारी ग्राम पंचायत झोर ने बताया कि मौका देखकर पानी निकासी की व्यवस्था करवाते है। अगर ऐसा है तो जल्द ही मौका देखकर पानी की निकासी करवाने का प्रयास करते है ताकि किसानों को कोई समस्या नही हो।

पानी, बिजली, मकान के लिए घुमंतू जाति का धरना दूसरे दिन भी जारी

चाकसू, (निसं)। जयपुर जिले के चाकसू विधानसभा में माधोराजपुरा पंचायत समिति में स्थानीय पटवारी, विकास अधिकारी तथा तहसीलदार द्वारा अवैधानिक तरीके से 50 वर्ष से भी अधिक समय से सरकारी भूमि पर रह रहे खानाबदोश परिवारों को बेदखल करने का मामला तूल पकड़ गया है।

घुमंतू जातियों ने इस मामले में आंदोलन की शुरुआत करते हुए आंदोलन को माधोराजपुरा पंचायत समिति से फैलाकर चाकसू विधानसभा तथा जयपुर जिला स्तर तक पहुंचा दिया है।

भारत जोड़ो मिशन सोसाइटी के अध्यक्ष अनीष कुमार ने बताया कि मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 2021 से पूर्व सरकारी भूमि पर बसी बस्तियों को वहीं पर पट्टा देने की घोषणा कर रखी है लेकिन निचले स्तर पर पटवारी विकास अधिकारी तथा तहसीलदार इस कार्य में रुचि नहीं ले रहे हैं। जिससे मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की घुमंतू जातियों को अच्छा जीवन देने की योजना को लागू नहीं किया जा पा रहा है।

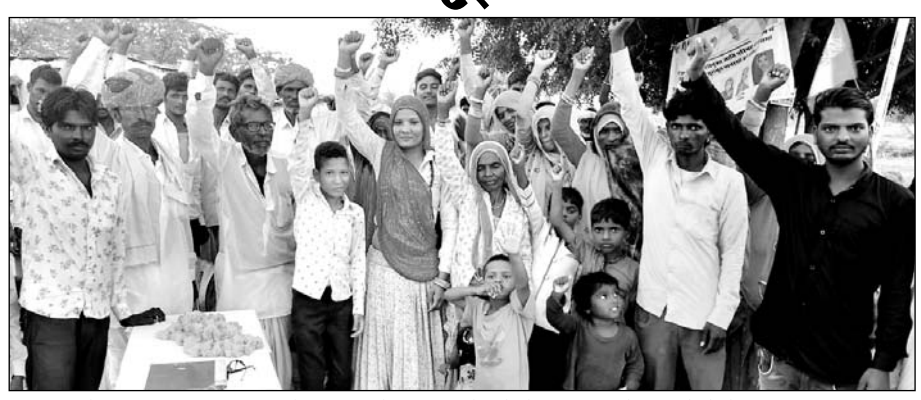

50 वर्ष से सरकारी भूमि पर रह रहे खानाबदोश परिवारों को बेदखल करने पर लोगों ने धरना दिया।

एक आकलन के अनुसार जयपुर जिले में लगभग 100000 घुमंतू जाति के लोग बिना पट्टों के तथा मूलभूत सुविधा के नारकीय जीवन गुजार रहे हैं। चाकसू विधानसभा से शुरू हुआ यह आंदोलन धीरे-धीरे अन्य विधानसभाओं में तथा जिलों में पहुंच रहा है और घुमंतू जाति के लोग तेजी से लामबंद हो रहे हैं।

भारत जोड़ो मिशन समिति के महिला प्रकोष्ठ की प्रदेश अध्यक्ष कालीबाई कालबेलिया ने उनके साथ भी दोयम दर्जे का बर्ताव करने का आरोप लगाते हुए बताया कि लगभग 50 वर्षों से वे बिना बिजली पानी के और बिना पट्टे के सरकारी भूमि में रह रही है जबकि पूर्व के अधिकारियों ने बिजली और पानी के कनेक्शन देने के आदेश दिए हुए हैं इसके बावजूद वर्तमान तहसीलदार तथा विकास अधिकारी गलत तथ्य पेश कर उसे बेदखल कर रहे हैं और ऐसा चाकसू विधानसभा में कई पंचायतों में हो रहा है।

आज दूसरे दिन के धरना प्रदर्शन पर डिडावता पंचायत, हरसूलिया,अमेरिया, चांदमा, मक्खन पुरा, नवागांव, समेलिया , हथेली, मांधी, खेड़ा, फागी, मेहंदवास, मंडालिया, कागिया, भोजपुरा, आदि लगभग एक दर्जन ग्राम पंचायत के प्रतिनिधि उपस्थित रहे। चंदा लाल बाबरिया, जय रामनाथ, सीताराम, मंत्रा, नंदा लाल बावरिया, जगदीश बागरिया, कल्याण बागरिया, रमेश, कल्याण, प्रभु, धनना, आदि कार्यकर्ताओं ने बस्ती बस्ती जाकर लोगों को जागरूक करने और उनका अधिकार लेने के लिए घर से निकलकर गांधीवादी तरीके से अनिश्चितकालीन धरने में शामिल होने की अपील के लिए प्रचार प्रसार करने का जिम्मा लिया है।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 3 जुलाई, 2023

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा, सोमवार, विक्रम संवत 2080, मूल नक्षत्र दिन 11:02 तक, ब्रह्म योग दिन 3:45 तक, विष्टि करण प्रात: 6:45 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-धनु, मंगल-सिंह, बुध-मिथुन, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज भद्रा प्रात: 6:45 तक है। आषाढ़ी पूर्णिमा, सत्यव्रत, गुरू पूर्णिमा, व्यास पूजा, मन्वादि और आज अष्टानिका महापर्व समाप्त होगा। आज से सन्यासियों का चातुर्मास आरम्भ होगा। आज वर्षा के लिए वायु परीक्षा सांय 7:21 पर होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:23 तक, शुभ 9:06 से 10:48 तक, चर 2:13 से 3:56 तक, लाभ-अमृत 3:56 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 5:41, सूर्यास्त 7:21

मेष
परिवार में शुभ-मांगलिक यंउेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। नवीन कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। मित्रों/रिश्तेदारों से संबंध खराब हो सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मिथुन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिलेगा।

कर्क
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

सिंह
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

कन्या
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बढ़ेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

धनु
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल बढ़ेगा।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यक्तिगत पारिवारिक कारणों से आवश्यक कार्यों पर ध्यान नहीं दे पाएंगे। अनावश्यक धन खर्च होगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कुंभ
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।